



परिचय पुस्तिका

- सिविल सेवा परीक्षा : सामान्य परिचय
- सामान्य अध्ययन का महत्व
- कैसे करें निबंध की तैयारी?
- साक्षात्कार की तैयारी कैसे करें?

Add: Balua Tal, Near Bharat Petroleum, Motihari (Bihar)

Mob: 9304444715, 8987392998 / www.gyanshilaIAS.com

सिविल सेवा परीक्षा

सामान्य परिचय (Introduction)

सिविल सेवा परीक्षा भारत की एक प्रतिष्ठित परीक्षा है। इसका आयोजन संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) द्वारा किया जाता है। सिविल सेवा परीक्षा के माध्यम से देश की विभिन्न प्रतिष्ठित सिविल सेवाओं, जैसे कि आई.ए.एस., आई.एफ.एस., आई.पी.एस., आई.आर.एस., आई.आर.टी.एस. के लिये अधिकारियों का चयन किया जाता है। हर साल लगभग 10 लाख उम्मीदवार इस परीक्षा के लिये आवेदन करते हैं, इनमें से लगभग 4 से 5 लाख परीक्षा में बैठते हैं और अंतिम रूप से लगभग एक हजार उम्मीदवार सफल होते हैं।

परीक्षा का प्रारूप

सिविल सेवा परीक्षा तीन चरणों में आयोजित की जाती है— प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार। प्रत्येक चरण में परीक्षा की प्रकृति भिन्न होती है, जैसे— प्रारंभिक परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रकृति के प्रश्न पूछे जाते हैं। इसमें प्रत्येक प्रश्न के लिये 4 विकल्प दिये जाते हैं जिनमें से उम्मीदवार को एक सही विकल्प का चयन करना होता है। मुख्य परीक्षा पूरी तरह से लिखित होती है, इसमें दिये गए प्रश्नों के निर्धारित शब्द-सीमा में वर्णनात्मक उत्तर लिखने होते हैं। साक्षात्कार में मौखिक प्रश्न पूछे जाते हैं। आगे हम सिविल सेवा परीक्षा के तीनों चरणों की विस्तार से चर्चा करेंगे।

प्रारंभिक परीक्षा

प्रारंभिक परीक्षा की संरचना (Structure of Preliminary Examination)

प्रारंभिक परीक्षा में दो प्रश्नपत्र होते हैं। पहला प्रश्नपत्र सामान्य अध्ययन का है, जबकि दूसरे को सिविल सेवा अभिवृत्ति परीक्षा (Civil Services Aptitude Test) या सीसैट कहते हैं। प्रारंभिक परीक्षा में सीसैट का प्रश्नपत्र अर्हकारी प्रकृति (Qualifying Nature) का होता है। दोनों प्रश्नपत्र 200-200 अंकों के होते हैं, इस प्रकार परीक्षा कुल 400 अंकों की होती है। पहले प्रश्नपत्र यानी सामान्य अध्ययन में 2-2 अंकों के 100 प्रश्न होते हैं, जबकि दूसरे प्रश्नपत्र (सीसैट) में 2.5-2.5 अंकों के 80 प्रश्न। दोनों प्रश्नपत्रों में प्रत्येक प्रश्न के साथ 4-4 विकल्प दिये जाते हैं, जिनमें से उम्मीदवार को सही विकल्प का चयन करना होता है। दोनों प्रश्नपत्रों में नकारात्मक अंकन (Negative Marking) की व्यवस्था लागू है, जिसके तहत 3 उत्तर गलत होने पर 1 सही उत्तर के बराबर अंक काट लिये जाते हैं। इस नियम के अंतर्गत सामान्य अध्ययन में एक सही उत्तर के लिये 2 अंक दिये जाते हैं, जबकि एक गलत उत्तर के लिये 0-67 अंक काट लिये जाते हैं। इसी तरह, सीसैट में एक सही उत्तर के लिये 2-5 अंक दिये जाते हैं, जबकि एक गलत उत्तर पर 0-83 अंक का नुकसान होता है।

चूंकि सीसैट क्वालीफाइंग पेपर के रूप में है, इसलिये प्रारंभिक परीक्षा पास करने के लिये किसी भी उम्मीदवार को सीसैट पेपर में सिर्फ 33 प्रतिशत अंक (लगभग 27 प्रश्न या 66 अंक) प्राप्त करने आवश्यक होते हैं। अगर वह इससे कम अंक प्राप्त करता है तो उसे फेल माना जाता है। प्रारंभिक परीक्षा के लिये कट-ऑफ का निर्धारण सिर्फ प्रथम प्रश्नपत्र यानी सामान्य अध्ययन के आधार पर किया जाता है।

कट-ऑफ का स्तर (Cut&off Level)

जितने अंकों के साथ अंतिम उम्मीदवार परीक्षा में सफल होता है, उस स्तर को कट-ऑफ कहा जाता है। मान लीजिये कि कुल 12,000 उम्मीदवारों ने परीक्षा पास की है। इसके लिये सभी उम्मीदवारों के कुल प्राप्तांकों की सूची बनाई जाएगी, जिसमें ऊपर से 12,000 उम्मीदवारों को चुन लिया जाएगा। इन चुने गए उम्मीदवारों में से अंतिम के जितने प्राप्तांक होंगे, उसी को कट-ऑफ कहा जाएगा।

सामान्य वर्ग के उम्मीदवारों की तुलना में आरक्षित वर्गों तथा विकलांग वर्ग के उम्मीदवारों के लिये कट-ऑफ कुछ कम होता है। वर्ष 2013 से 2020 को प्रारंभिक परीक्षा में विभिन्न वर्गों के लिये कट-ऑफ इस प्रकार रहा—

वर्ष Category	सामान्य वर्ग (General Category)	आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS)	अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC)	अनुसूचित जाति (SC)	अनुसूचित जनजाति (ST)	विकलांग वर्ग-1 (PH-1)	विकलांग वर्ग-2 (PH-2)	विकलांग वर्ग-3 (PH-3)
2013	241	--	222	207	201	199	184	163
2014	205	--	204	182	174	167	113	115
2015	107.34	--	106.00	94.00	91.34	90.66	76.66	40.00
2016	116.00	--	110.66	99.34	96.00	75.34	72.66	40.00
2017	105.34	--	102.66	88.66	88.66	85.34	61.34	40.00
2018	98.00	--	96.66	84.00	83.34	73.34	53.34	40.00
2019	98.00	90.00	95.34	82.00	77.34	53.34	44.66	40.66
2020	92.51	75.55	89.12	74.84	68.71	70.06	63.94	40.82
2021	87.54	80.14	84.85	75.41	70.71	68.02	67.33	43.09
2022	88.22	82.83	87.54	74.08	69.35	49.84	58.59	40.40
2023	75.41	68.02	74.75	59.25	47.82	40.40	47.13	40.40
2024	87.98	85.92	87.28	79.03	74.23	69.42	65.30	40.56
2025	92.66	89.34	92.00	84.00	82.66	76.66	54.66	40.66

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि कट-ऑफ हमेशा स्थिर नहीं रहता है। उम्मीदवारों की संख्या, उनकी योग्यता, रिक्तियों (vacancies) की संख्या तथा प्रश्नपत्रों के कठिनाई स्तर में परिवर्तन के साथ-साथ यह हर वर्ग के लिये कुछ ज्यादा या कम होता रहता है।

ध्यान रहे कि अंकों की ये गणनाएँ नकारात्मक अंकन से हुए नुकसान को घटाने के बाद की अर्थात् शुद्ध प्राप्तांकों की हैं। इसका अर्थ है कि किसी भी उम्मीदवार को प्रत्येक 3 गलत उत्तरों के बदले 1 सही उत्तर कम करके अपने प्राप्तांकों की गणना करनी चाहिये।

आयु सीमा और अवसरों की संख्या (Age Limit and No- of Attempts)

वर्ष (Category)	आयु सीमा (Age Limit)	अवसरों की संख्या (No- of Attempts)
सामान्य वर्ग (General Category)	21 से 32 वर्ष	06
अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC)	21 से 35 वर्ष	09
अनुसूचित जाति (SC)	21 से 37 वर्ष	21 से 37 वर्ष तक
अनुसूचित जनजाति (ST)	21 से 37 वर्ष	वर्ष 21 से 37 वर्ष तक

- आयु की गणना परीक्षा के कैलेंडर वर्ष के 1 अगस्त से की जाएगी।
- जो अभ्यर्थी 1 जनवरी, 1980 से 31 दिसंबर, 1989 के बीच जम्मू कश्मीर में निवासरत थे उन्हें आयु में अधिकतम 5 वर्ष की छूट मिलेगी।

सामान्य अध्ययन (प्रारंभिक परीक्षा) का पाठ्यक्रम
[Syllabus of General Studies (Preliminary Test)]

प्रारंभिक परीक्षा में प्रश्नपत्र-1 का संबंध सामान्य अध्ययन से है। इसका पाठ्यक्रम निम्नलिखित है-

1	राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की सामयिक घटनाएँ (Current events of national and international importance)।
2	भारत का इतिहास और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (History of India and Indian National Movement)।
3	भारत एवं विश्व का भूगोल : भारत एवं विश्व का प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक भूगोल (Indian and World Geography & Physical] Social] Economic Geography of India and the World)।
4	भारतीय राजतंत्र और शासन- संविधान, राजनीतिक प्रणाली, पंचायती राज, लोकनीति, अधिकारों संबंधी मुद्दे इत्यादि (Indian Polity and Governance & Constitution] Political System] Panchayati Raj] Public Policy] Rights Issues etc)।
5	आर्थिक और सामाजिक विकास- सतत् विकास, गरीबी, समावेशन, जनसांख्यिकी, सामाजिक क्षेत्र में की गई पहलें आदि (Economic and Social Development] Sustainable Development&Poverty] Inclusion] Demographics] Social Sector initiatives etc)।
6	पर्यावरणीय पारिस्थितिकी, जैव-विविधता और मौसम परिवर्तन संबंधी सामान्य मुद्दे, जिनके लिये विषयगत विशेषज्ञता आवश्यक नहीं है (General issues on Environmental Ecology] Bio&diversity & Climate Change & that do not require subject specialization)।
7	सामान्य विज्ञान (General Science)।

सामान्य अध्ययन : एक परिचय (General Studies: An Introduction)

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, सामान्य अध्ययन किसी खास विषय का गहरा अध्ययन न होकर विभिन्न विषयों का ऐसा अध्ययन है जिसके लिये किसी अनुसंधान या विशेषज्ञता की ज़रूरत नहीं है। संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने सिविल सेवा परीक्षा से संबंधित अपनी अधिसूचना में सामान्य अध्ययन का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा-

"सामान्य अध्ययन में ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनके उत्तर एक सुशिक्षित व्यक्ति बिना किसी विशेषज्ञतापूर्ण अध्ययन के दे सकता है। ये प्रश्न बहुत से ऐसे विषयों में उम्मीदवार की जानकारी या जागरूकता का स्तर जाँचने के लिये पूछे जाएंगे जिनकी प्रासंगिकता सिविल सेवाओं में कार्य करने के दौरान होती है। प्रश्नों के माध्यम से सभी प्रासंगिक मुद्दों पर उम्मीदवार की मूल समझ परखने के साथ-साथ इस बात की भी जाँच की जाएगी कि उसके पास परस्पर विरोधी सामाजिक-आर्थिक लक्ष्यों तथा माँगों के विश्लेषण की कितनी योग्यता है।"

देखा जाए तो यूपीएससी द्वारा की गई यह घोषणा सिर्फ औपचारिक महत्त्व की है, सच्चाई यह है कि सामान्य अध्ययन के प्रश्नपत्र में प्रायः इतने कठिन और गहरे स्तर के प्रश्न पूछे जाते हैं कि उस विषय के विशेषज्ञ भी उनका उत्तर नहीं दे पाते।

पाठ्यक्रम की चुनौतियाँ (Challenges of Syllabus)

सामान्य अध्ययन का पाठ्यक्रम इतना विस्तृत और समावेशी है कि उसे गम्भीरता के साथ कम-से-कम एक वर्ष का समय देना ज़रूरी है। हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिये तो सामान्य अध्ययन दोहरी चुनौती पेश करता है। एक तरफ़ अंग्रेज़ी की तुलना में हिंदी में उपलब्ध अध्ययन-सामग्री बहुत अच्छी नहीं होती है तो दूसरी तरफ़ कुछ परीक्षकों का हिंदी भाषा में सहज न होना भी हिंदी माध्यम के परीक्षार्थियों को नुकसान पहुँचा सकता है। इसलिये हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को अपनी तैयारी में अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है।

अगर आप सचमुच आई.ए.एस. या सिविल सेवक बनना चाहते हैं तो सामान्य अध्ययन को पूरे विस्तार और गहराई से पढ़े बिना आपका अपनी मंज़िल तक पहुँचना आसान नहीं है।

यू.पी.एस.सी. (सिविल सेवा) परीक्षा प्रारूप

प्रारंभिक परीक्षा (मई-जून)

प्रश्नपत्र-I : सामान्य अध्ययन

- प्रश्नों की संख्या: 100
- अधिकतम अंक: 200
- समय: 2 घंटे
- ऋणात्मक अंक: 1/3

प्रश्नपत्र-II : सीसैट

- प्रश्नों की संख्या: 80
- अधिकतम अंक: 200
- समय: 2 घंटे
- ऋणात्मक अंक: 1/3

* नोट— प्रारंभिक परीक्षा में सीसैट का प्रश्नपत्र अर्हकारी (Qualifying) प्रकृति का होता है तथा मेरिट का निर्धारण प्रश्नपत्र-1 (सामान्य अध्ययन) में प्राप्त किये गए अंकों के आधार पर होता है।

मुख्य परीक्षा (सितंबर-अक्टूबर)

इस परीक्षा का आयोजन अभ्यर्थियों की सामान्य जानकारी, जागरूकता, बुद्धि, चरित्र, अभिव्यक्ति की क्षमता, व्यक्तित्व एवं सेवा के लिये सामान्य उपयुक्तता को दृष्टि में रखते हुए सामान्य अभिरुचि से संबंधित विषयों के आधार पर व्यक्तित्व परीक्षण की जाँच हेतु किया जाता है।

- अधिकतम अंक : 275

साक्षात्कार (फरवरी-मार्च)

मेधा सूची (Merit List) का निर्धारण करने वाले प्रश्नपत्र

अर्हकारी (Qualifying) प्रश्नपत्र

प्रश्नपत्र : अ

- हिंदी या संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल कोई भाषा
- क्वालिफाइंग: 25%
- अधिकतम अंक: 300
- समय: 3 घंटे

प्रश्नपत्र : ब

- अंग्रेजी भाषा
- क्वालिफाइंग: 25%
- अधिकतम अंक: 300
- समय: 3 घंटे

* नोट— मुख्य परीक्षा के अर्हकारी (Qualifying) प्रश्नपत्रों में प्राप्त किये गये अंक मेरिट निर्धारण में नहीं जोड़े जाते हैं। इनमें केवल उत्तीर्ण होना अनिवार्य होता है।

प्रश्नपत्र-I : निबंध

- अधिकतम अंक: 250
- समय : 3 घंटे

प्रश्नपत्र-II : सामान्य अध्ययन-1

* भारतीय विरासत और संस्कृति, विश्व का इतिहास एवं भूगोल तथा समाज

- अधिकतम अंक: 250
- समय: 3 घंटे

प्रश्नपत्र-III : सामान्य अध्ययन-2

* शासन व्यवस्था, संविधान, राजव्यवस्था, सामाजिक न्याय तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध

- अधिकतम अंक : 250
- समय : 3 घंटे

प्रश्नपत्र-IV : सामान्य अध्ययन-3

* प्रौद्योगिकी, आर्थिक विकास, जैव-विविधता, पर्यावरण, सुरक्षा तथा आपदा प्रबंधन

- अधिकतम अंक : 250
- समय : 3 घंटे

प्रश्नपत्र-V : सामान्य अध्ययन-4

- नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिवृत्ति
- अधिकतम अंक : 250
- समय : 3 घंटे

प्रश्नपत्र-VI : वैकल्पिक विषय

- प्रश्नपत्र-1
- अधिकतम अंक : 250
- समय : 3 घंटे

प्रश्नपत्र-VII : वैकल्पिक विषय

- प्रश्नपत्र-2
- अधिकतम अंक : 250
- समय : 3 घंटे

तैयारी की उचित रणनीति क्या होनी चाहिये? (What should be the appropriate strategy for the preparation?)

भिन्न-भिन्न अकादमिक पृष्ठभूमि होने की वजह से तैयारी की रणनीति सभी के लिये एक जैसी नहीं हो सकती। उदाहरण के लिये, अगर किसी उम्मीदवार ने इतिहास, भूगोल और राजनीति विज्ञान के साथ स्नातक स्तर की पढ़ाई की है किन्तु उसे विज्ञान पढ़ने व समझने में समस्या होती है तो उसकी रणनीति अलग तरह से बनेगी, वहीं कुछ उम्मीदवार ऐसे भी होंगे जो इंजीनियर या डॉक्टर होने के कारण विज्ञान में अत्यंत सहज हैं लेकिन उनका मन इतिहास या राजनीति विज्ञान की पुस्तक को देखने का भी नहीं होता। स्वाभाविक ही है कि इनकी रणनीति अलग तरीके से बनेगी। मोटे तौर पर, रणनीति के संबंध में कुछ सुझाव ये हो सकते हैं—

- सभी खंडों पर बराबर बल देने की बजाय कुछ चुने हुए खंडों पर अधिक बल देना चाहिये। उम्मीदवार को कम-से-कम इतने खंड चुन लेने चाहिये जिनसे सम्मिलित रूप से 80–85 प्रश्न आने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती हो ताकि गंभीर तैयारी से लगभग 65–70 प्रश्न सही किये जा सकें। हालाँकि, शेष खंडों को छोड़ देना अच्छी बात तो नहीं है, लेकिन प्रारंभिक परीक्षा नजदीक होने पर आपात योजना के रूप में इसे ठीक माना जा सकता है।
- अगर आप ध्यान से पिछले वर्षों में पूछे गए प्रश्नों का अवलोकन करें तो पाएंगे कि सभी खंडों के अंदर कुछ विशेष उप-खंडों से प्रायः ज्यादा प्रश्न पूछे जाने की प्रवृत्ति होती है। इसलिये बेहतर यही रहेगा कि उन उप-खंडों पर ज्यादा समय दें। उदाहरण के लिये, इतिहास खंड के अंतर्गत दो उपखंडों से अधिक प्रश्न पूछे जाने की प्रवृत्ति दिखती है— एक तो स्वतंत्रता आंदोलन से, और दूसरा कला व संस्कृति से। अगर इन दोनों खंडों को ठीक से पढ़ लिया जाए तो इतिहास के लगभग 85–90% प्रश्न मिल जाने चाहियें। इसी तरह, कला व संस्कृति के अंतर्गत प्राचीन भारत पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये।
- गौर करने वाली एक अन्य बात यह है कि ज्यादा मेहनत उन खंडों के लिये करनी चाहिये जो मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम में भी शामिल हैं। इससे मुख्य परीक्षा में सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है। उदाहरण के लिये, इतिहास खंड को देखें तो आधुनिक भारत का इतिहास मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम में भी शामिल है, अतः प्रारंभिक परीक्षा में आधुनिक भारत का इतिहास विस्तारपूर्वक पढ़ने पर मुख्य परीक्षा में भी बेहतर परिणाम की सम्भावना बढ़ जाती है।
- ध्यान देने वाली एक बात यह भी है कि सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम के जो खंड सिर्फ मुख्य परीक्षा में पूछे जाते हैं, उन्हें प्रारंभिक परीक्षा के लिये शेष बचे दो-ढाई महीनों में न पढ़ा जाए। इन खंडों में विश्व इतिहास, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, सामाजिक न्याय, आंतरिक सुरक्षा तथा एथिक्स शामिल हैं।
- यह मानकर भी चलना चाहिये कि उम्मीदवार चाहे जितनी भी तैयारी कर ले, हर खंड में कुछ-न-कुछ ऐसे प्रश्न अवश्य होंगे जो उसकी जानकारी की परिधि से बाहर के होंगे। आप जिस भी खंड की तैयारी गम्भीरता से करें, लक्ष्य यह रखिये कि उसके 70–80% प्रश्न आपसे हल हो जाएँ। अगर आप किसी खंड के सभी प्रश्नों को सही करने के फेर में पड़ेंगे तो एक ही खंड की तैयारी में अनुत्पादक तरीके से बहुत समय नष्ट कर देंगे।
- सामान्य अध्ययन की तैयारी में इस बात का ध्यान अवश्य रखा जाए कि इसमें सभी खंडों के प्रश्न काफी गहरे स्तर के होते हैं और वे विषय की सूक्ष्म समझ की माँग करते हैं। सामान्यतः हर प्रश्न में कुछ तथ्य या कथन देकर उनके संयोजन से जटिल विकल्प बनाए जाते हैं ताकि स्थूल समझ वाले उम्मीदवार सफल न हो सकें। उदाहरण के लिये, अधिकांश प्रश्नों में शुरुआत में 3–4 कथन या तथ्य दिये जाते हैं, जिनमें से कुछ सही होते हैं और कुछ गलत। प्रायः ऐसा होता है कि उम्मीदवार उनमें से कुछ तथ्यों से परिचित होता है और कुछ से नहीं। उसके बाद, उन तथ्यों को आपस में जोड़कर उम्मीदवार को 4 कठिन विकल्प दिये जाते हैं, जैसे (i) कथन 1, 3 तथा 4 सही हैं और कथन 2 गलत, (ii) कथन 1, 2 तथा 4 सही हैं और कथन 3 गलत। उम्मीदवार को ऐसे कठिन विकल्पों में से एक सही विकल्प चुनना होता है। इसमें प्रश्न के गलत होने का खतरा तो रहता ही है, साथ में कठिन विकल्पों के चलते प्रश्नों को हल करने में अधिक समय भी लगता है और अंत में समय-प्रबंधन खुद एक समस्या बन जाता है।

इस समस्या का समाधान करने का बेहतर तरीका यह है कि सबसे पहले वही प्रश्न किये जाएँ जो उम्मीदवार की जानकारी के दायरे में हों, उन्हें पर्याप्त समय दिया जाए। बीच-बीच में जो प्रश्न नहीं आते हैं अथवा जिन पर गहरा अध्ययन नहीं है, उन्हें निशान लगाकर छोड़ देना चाहिये और अगर अंत में समय बचे तो उनका उत्तर देने का प्रयास करना चाहिये, अन्यथा उन्हें छोड़ देने में ही भलाई है।

2012 से 2022 तक प्रारंभिक परीक्षा में विभिन्न खंडों से पूछे गए प्रश्नों का वर्गीकरण

वर्ष	भारतीय इतिहास, कला एवं संस्कृति	भारतीय राजव्यवस्था एवं शासन	भारत एवं विश्व का भूगोल	पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी	भारतीय अर्थव्यवस्था एवं विकास	सामान्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	समसामयिक मुद्दे	कुल
2012	20	21	17	14	14	10	04	100
2013	16	17	18	14	18	16	01	100

2014	19	10	20	20	11	12	08	100
2015	16	13	18	12	16	9	16	100
2016	16	6	3	16	15	7	37	100
2017	13	22	8	17	29	3	08	100
2018	22	13	9	10	22	14	10	100
2019	16	15	8	19	20	15	07	100
2020	19	14	13	11	14	10	19	100
2021	20	18	13	15	14	14	06	100
2022	16	16	15	13	15	14	11	100
2023	13	14	09	21	14	05	24	100
2024	12	15	18	15	14	13	13	100
2025	13-15	14-15	13-15	15	18-21	13-15	11-15	100

सीसैट (CSAT)

सीसैट : एक परिचय (CSAT: An Introduction)

प्रारंभिक परीक्षा के प्रश्नपत्र -2 को 'सीसैट' (CSAT) यानी 'सिविल सेवा अभिवृत्ति परीक्षा' (Civil Services Aptitude Test) कहे जाने का प्रचलन है।

'सीसैट' पेपर वस्तुतः उम्मीदवार की बौद्धिक क्षमता (IQ-Intelligence Quotient), की जाँच करता है। इस पेपर में प्रश्नों की प्रकृति एवं अनुपात को सिविल सेवाओं या प्रशासन की आवश्यकताओं के अनुरूप निर्धारित किया गया है। उदाहरण के तौर पर, इसमें प्रशासन की समस्याओं से जुड़े निर्णयन व समस्या समाधान (Decision Making & Problem Solving) के कुछ प्रश्न होते हैं जो प्रबंधन (Management) की समस्याओं से भिन्न प्रकृति के होते हैं।

कुल मिलाकर, 'सीसैट' बौद्धिक योग्यता (Intelligence Quotient) की एक परीक्षा है जो विशेष रूप से सिविल सेवाओं या प्रशासन के लिये आवश्यक बौद्धिक क्षमताओं का परीक्षण करने के उद्देश्य से प्रस्तावित की गई है।

सीसैट की भूमिका (Role of CSAT)

जैसा कि हम शुरुआत में ही चर्चा कर चुके हैं, प्रारंभिक परीक्षा में सीसैट प्रश्नपत्र अर्हकारी प्रकृति (Qualifying Nature) का होता है। किसी भी उम्मीदवार को प्रारंभिक परीक्षा पास करने के लिये सीसैट में 33% अंक प्राप्त करने होते हैं। प्रारंभिक परीक्षा में सीसैट पेपर में 80 प्रश्न पूछे जाते हैं जिनमें प्रत्येक प्रश्न के लिये 2.5 अंक निर्धारित होते हैं और इस तरह सीसैट प्रश्नपत्र कुल 200 अंकों का होता है। किसी भी अभ्यर्थी को सीसैट के 200 अंकों में से 66 अंक प्राप्त करने अनिवार्य होते हैं यानी उसे नकारात्मक अंकन (Negative Marking) के लिये काटे गए अंकों के बाद 66 अंक प्राप्त करने होते हैं। इसके लिये उसे 80 प्रश्नों में से लगभग 27 प्रश्न (नकारात्मक अंकन द्वारा काटे गए प्रश्नों के बाद) सही करने होते हैं।

इसलिये, अगर कोई उम्मीदवार सीसैट पेपर में 33% अंक प्राप्त नहीं कर पाता है तो उसे फेल माना जाएगा, फिर चाहे उसने सामान्य अध्ययन में कितना भी अच्छा प्रदर्शन क्यों न किया हो।

सीसैट का पाठ्यक्रम (Syllabus of CSAT)

क्र.सं.	खंड
1	बोधगम्यता (Comprehension)
2	संचार कौशल सहित अंतर-वैयक्तिक कौशल (Interpersonal skills including communication skills)
3	तार्किक कौशल एवं विश्लेषणात्मक क्षमता (Logical reasoning and analytical ability)
4	निर्णय लेना और समस्या समाधान (Decision making and problem solving)

5	सामान्य मानसिक योग्यता (General mental ability)
6	आधारभूत संख्ययन (संख्याएँ और उनके संबंध, विस्तार-क्रम आदि) (दसवीं कक्षा का स्तर); आंकड़ों का निर्वाचन (चार्ट, ग्राफ, तालिका, आंकड़ों की पर्याप्तता आदि- दसवीं कक्षा का स्तर) [Basic numeracy (numbers and their relations, orders of magnitude, etc.) (Class X level), Data interpretation (charts, graphs, tables, data sufficiently etc. (Class X level)]

मुख्य परीक्षा

परिचय (Introduction)

सिविल सेवा परीक्षा का दूसरा चरण शुमुख्य परीक्षा कहलाता है। प्रारंभिक परीक्षा में सफल हुए उम्मीदवारों को सामान्यतः सितम्बर-अक्टूबर माह के दौरान मुख्य परीक्षा देने के लिये आमंत्रित किया जाता है। जहाँ प्रारंभिक परीक्षा पूरी तरह वस्तुनिष्ठ (Objective) होती है, जिसमें उम्मीदवार को प्रत्येक प्रश्न के लिये दिये गए 4 विकल्पों में से एक सही विकल्प को चुनना होता है, वहीं मुख्य परीक्षा में अलग-अलग शब्द-सीमा वाले वर्णनात्मक (Descriptive) प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनके उत्तर निर्धारित शब्द-सीमा में लिखने होते हैं। यही कारण है कि मुख्य परीक्षा में सफल होने के लिये लेखन-शैली को एक महत्वपूर्ण योग्यता माना जाता है।

मुख्य परीक्षा की संरचना (Structure of Main Examination)

मुख्य परीक्षा कुल 1750 अंकों की होती है जिनमें 1000 अंक सामान्य अध्ययन के लिये (250-250 अंकों के 4 प्रश्नपत्र), 500 अंक एक वैकल्पिक विषय के लिये (250-250 अंकों के 2 प्रश्नपत्र) तथा 250 अंक निबंध के लिये निर्धारित हैं। इसके अलावा, 300-300 अंकों के दो प्रश्नपत्र अंग्रेजी तथा भारतीय भाषा (हिंदी अथवा संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल कोई अन्य भाषा), के होते हैं जो अर्हकारी प्रकृति (Qualifying Nature) के हैं। भारतीय भाषा तथा अंग्रेजी के इन दोनों प्रश्नपत्रों में भी न्यूनतम अर्हता अंक 25-25% (75-75) निर्धारित किये गए हैं।

परीक्षा का माध्यम

मुख्य परीक्षा के प्रश्नपत्र हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में साथ-साथ प्रकाशित किये जाते हैं, पर उम्मीदवारों को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में से किसी में भी उत्तर देने की छूट होती है। उम्मीदवार अपने सिविल सेवा परीक्षा के फार्म में मुख्य परीक्षा हेतु जिस भाषा को अपने माध्यम के तौर पर अंकित करते हैं, उन्हें मुख्य परीक्षा के सभी प्रश्नपत्रों के उत्तर उसी भाषा में लिखने होते हैं। केवल साहित्य के विषयों में यह छूट है कि उम्मीदवार उसी भाषा की लिपि में उत्तर लिखते हैं, भले ही उसका माध्यम वह भाषा न हो। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी माध्यम का उम्मीदवार अगर वैकल्पिक विषय के रूप में पंजाबी का चयन करता है तो उसके उत्तर वह गुरुमुखी लिपि में लिखेगा। इसके बावजूद, यदि किसी उम्मीदवार ने मुख्य परीक्षा के लिये अंग्रेजी माध्यम से भिन्न किसी माध्यम का चुनाव किया है, उसके पास वैकल्पिक विषय का प्रश्नपत्र अंग्रेजी में लिखने का विकल्प रहेगा।

मुख्य परीक्षा के लिये वैकल्पिक विषयों की सूची

कृषि	पशुपालन एवं पशुचिकित्सा विज्ञान	नृविज्ञान
वनस्पति विज्ञान	रसायन विज्ञान	सिविल इंजीनियरिंग
वाणिज्यशास्त्र तथा लेखा विधि	अर्थशास्त्र	विद्युत इंजीनियरिंग
भूगोल	भू-विज्ञान	इतिहास
विधि	प्रबंधन	गणित
यांत्रिक इंजीनियरिंग	चिकित्सा विज्ञान	दर्शनशास्त्र
भौतिकी	राजनीति विज्ञान तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध	मनोविज्ञान
लोक प्रशासन	समाजशास्त्र	सांख्यिकी
प्राणि विज्ञान		

- निम्नलिखित भाषाओं में से किसी एक भाषा का साहित्य : असमिया, बंगाली, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू और अंग्रेजी।

सामान्य अध्ययन (मुख्य परीक्षा) पाठ्यक्रम [General Studies (Mains) Syllabus]

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-1 : भारतीय विरासत और उसकी संस्कृति, विश्व का इतिहास एवं भूगोल और समाज		G.S. Paper 1: Indian Heritage and Culture, History and Geography of the World and Society	
क्र.सं.	विषय	S.No.	Topic
1	भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के कला के रूप, साहित्य और वास्तुकला के मुख्य पहलू शामिल होंगे।	1	Indian culture will cover the salient aspects of Art Forms, Literature and Architecture from ancient to modern times.
2	18वीं सदी के लगभग मध्य से लेकर वर्तमान समय तक का आधुनिक भारतीय इतिहास— महत्त्वपूर्ण घटनाएँ, व्यक्तित्व, विषय।	2	Modern Indian history from about the middle of the eighteenth century until the present- significant events, personalities, issues.
3	स्वतंत्रता संग्राम— इसके विभिन्न चरण और देश के विभिन्न भागों से इसमें अपना योगदान देने वाले महत्त्वपूर्ण व्यक्ति/उनका योगदान।	3	The Freedom Struggle - its various stages and important contributors/contributions from different parts of the country.
4	स्वतंत्रता के पश्चात् देश के अंदर एकीकरण और पुनर्गठन।	4	Post-independence consolidation and reorganization within the country
5	विश्व के इतिहास में 18वीं सदी तथा बाद की घटनाएँ यथा औद्योगिक क्रांति, विश्व युद्ध, राष्ट्रीय सीमाओं का पुनःसीमांकन, उपनिवेशवाद, उपनिवेशवाद की समाप्ति, राजनीतिक दर्शनशास्त्र जैसे साम्यवाद, पूंजीवाद, समाजवाद आदि शामिल होंगे, उनके रूप और समाज पर उनका प्रभाव।	5	History of the world will include events from 18th century such as Industrial revolution, World wars, Redrawing of national boundaries, Colonization, Decolonization, Political philosophies like Communism, Capitalism, Socialism etc.- their forms and effect on the society.
6	भारतीय समाज की मुख्य विशेषताएँ, भारत की विविधता।	6	Salient features of Indian society, Diversity of India.
7	महिलाओं की भूमिका और महिला संगठन, जनसंख्या एवं संबद्ध मुद्दे, गरीबी और विकासात्मक विषय, शहरीकरण, उनकी समस्याएँ और उनके रक्षोपाय।	7	Role of women and women's organizations, Population and associated issues, Poverty and developmental issues, Urbanization, their problems and their remedies.
8	भारतीय समाज पर भूमंडलीकरण का प्रभाव।	8	Effects of globalization on Indian society.
9	सामाजिक सशक्तीकरण, संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद और धर्मनिरपेक्षता।	9	Social empowerment, Communalism, Regionalism & Secularism.
10	विश्व के भौतिक भूगोल की मुख्य विशेषताएँ।	10	Salient features of world's physical geography.
11	विश्व भर के मुख्य प्राकृतिक संसाधनों का वितरण (दक्षिण एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप को शामिल करते हुए), विश्व (भारत सहित) के विभिन्न भागों में प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र के उद्योगों को स्थापित करने के लिये जिम्मेदार कारक।	11	Distribution of key natural resources across the world (including South Asia and the Indian sub-continent); factors responsible for the location of primary, secondary and tertiary sector industries in various parts of the world (including India).
12	भूकम्प, सुनामी, ज्वालामुखीय हलचल, चक्रवात आदि जैसी महत्त्वपूर्ण भू-भौतिकीय घटनाएँ, भौगोलिक विशेषताएँ और उनके स्थान— अति महत्त्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताओं (जल-स्रोत और हिमावरण सहित) और वनस्पति एवं प्राणिजगत में परिवर्तन और इस प्रकार के परिवर्तनों के प्रभाव।	12	Important Geophysical phenomena such as Earthquakes, Tsunami, Volcanic activity, Cyclone etc., geographical features and their location- changes in critical geographical features (including Waterbodies and Ice-caps) and in flora and fauna and the effects of such changes.

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-2: शासन व्यवस्था, संविधान, शासन प्रणाली, सामाजिक न्याय तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध		G.S. Paper 2: Governance, Constitution, Polity, Social Justice and International Relations	
क्र.सं.	विषय	S.No.	Topic
1	भारतीय संविधान— ऐतिहासिक आधार, विकास, विशेषताएँ, संशोधन, महत्वपूर्ण प्रावधान और बुनियादी संरचना।	1	Indian Constitution- historical underpinnings, evolution, features, amendments, significant provisions and basic structure.
2	संघ एवं राज्यों के कार्य तथा उत्तरदायित्व? संघीय ढाँचे से संबंधित विषय एवं चुनौतियाँ, स्थानीय स्तर पर शक्तियों और वित्त का हस्तांतरण और उसकी चुनौतियाँ।	2	Functions and responsibilities of the Union and the States, issues and challenges pertaining to the federal structure, devolution of powers and finances up to local levels and challenges therein.
3	विभिन्न घटकों के बीच शक्तियों का पृथक्करण, विवाद निवारण तंत्र तथा संस्थान।	3	Separation of powers between various organs, dispute redressal mechanisms and institutions.
4	भारतीय संवैधानिक योजना की अन्य देशों के साथ तुलना।	4	Comparison of the Indian constitutional scheme with that of other countries.
5	संसद और राज्य विधायिका— संरचना, कार्य, कार्य—संचालन, शक्तियाँ एवं विशेषाधिकार और इनसे उत्पन्न होने वाले विषय।	5	Parliament and State Legislatures- structure, functioning, conduct of business, powers & privileges and issues arising out of these.
6	कार्यपालिका और न्यायपालिका की संरचना, संगठन और कार्य— सरकार के मंत्रालय एवं विभाग, प्रभावक समूह और औपचारिक/अनौपचारिक संघ तथा शासन प्रणाली में उनकी भूमिका।	6	Structure, organization and functioning of the Executive and the Judiciary; Ministries and Departments of the Government; pressure groups and formal/informal associations and their role in the Polity.
7	जन प्रतिनिधित्व अधिनियम की मुख्य विशेषताएँ।	7	Salient features of the Representation of People's Act. (Note: "Salies" is a typo in the original text for "Salient")
8	विभिन्न संवैधानिक पदों पर नियुक्ति और विभिन्न संवैधानिक निकायों की शक्तियाँ, कार्य और उत्तरदायित्व।	8	Appointment to various Constitutional posts, powers, functions and responsibilities of various Constitutional Bodies.
9	सांविधिक, विनियामक और विभिन्न अर्द्ध-न्यायिक निकाय।	9	Statutory, regulatory and various quasi-judicial bodies.
10	सरकारी नीतियों और विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिये हस्तक्षेप और उनके अभिकल्पन तथा कार्यान्वयन के कारण उत्पन्न विषय।	10	Government policies and interventions for development in various sectors and issues arising out of their design and implementation.
11	विकास प्रक्रिया तथा विकास उद्योग— गैर-सरकारी संगठनों, स्वयं सहायता, समूहों, विभिन्न समूहों और संघों, दानकर्ताओं, लोकोपकारी संस्थाओं, संस्थागत एवं अन्य पक्षों की भूमिका।	11	Development processes and the development industry- the role of NGOs, SHGs, various groups and associations donors, charities, institutional and other stakeholders.
12	केंद्र एवं राज्यों द्वारा जनसंख्या के अति संवेदनशील वर्गों के लिये कल्याणकारी योजनाएँ और इन योजनाओं का कार्य—निष्पादन इन अतिसंवेदनशील वर्गों की रक्षा एवं बेहतरी के लिये गठित तंत्र, विधि, संस्थान एवं निकाय।	12	Welfare schemes for vulnerable sections of the population. by the Centre and States and the performance of these schemes; mechanisms, laws, institutions and bodies constituted for the protection and betterment of these vulnerable sections.

13	स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधनों से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित विषय।	13	Issues relating to development and management of Social Sector/Services relating to Health, Education, Human Resources.
14	गरीबी एवं भूख से संबंधित विषय।	14	Issues relating to poverty and hunger.
15	शासन व्यवस्था, पारदर्शिता और जवाबदेही के महत्वपूर्ण पक्ष, ई-गवर्नेंस- अनुप्रयोग, मॉडल, सफलताएँ, सीमाएँ, और सम्भावनाएँ नागरिक चार्टर, पारदर्शिता एवं जवाबदेही और संस्थागत तथा अन्य उपाय।	15	Important aspects of governance, transparency and accountability, e-governance- applications, models, successes, limitations and potential; citizens charters, transparency & accountability and institutional and other measures.
16	लोकतंत्र में सिविल सेवाओं की भूमिका।	16	Role of civil services in a democracy.
17	भारत एवं इसके पड़ोसी-संबंध	17	India and its neighbourhood-relations.
18	द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और भारत से संबंधित और/अथवा भारत के हितों को प्रभावित करने वाले करार।	18	Bilateral, regional and global groupings and agreements involving India and/or affecting India's interests.
19	भारत के हितों पर विकसित तथा विकासशील देशों की नीतियों तथा राजनीति का प्रभाव प्रवासी भारतीय।	19	Effect of policies and politics of developed and developing countries on India's interests, Indian diaspora.
20	महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, संस्थाएँ और मंच- उनकी संरचना, अधिदेश।	20	Important International institutions, agencies and fora- their structure, mandate.

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-3: प्रौद्योगिकी, आर्थिक विकास, जैव विविधता, पर्यावरण, सुरक्षा तथा आपदा प्रबंधन		G.S. Paper 3: Technology, Economic Development, Biodiversity, Environment, Security & Disaster Management	
क्र.सं.	विषय	S.No.	Topic
1	भारतीय अर्थव्यवस्था तथा योजना, संसाधनों को जुटाने, प्रगति, विकास तथा रोजगार से संबंधित विषय।	1	Indian Economy and issues relating to planning, mobilization of resources, growth, development and employment.
2	समावेशी विकास तथा इससे उत्पन्न विषय।	2	Inclusive growth and issues arising from it.
3	सरकारी बजट।	3	Government Budgeting.
4	मुख्य फसलें- देश के विभिन्न भागों में फसलों का पैटर्न- सिंचाई के विभिन्न प्रकार एवं सिंचाई प्रणाली- कृषि उत्पाद का भंडारण, परिवहन तथा विपणन, संबंधित विषय और बाधाएँ; किसानों की सहायता के लिये ई-प्रौद्योगिकी।	4	Major crops - cropping patterns in various parts of the country, different types of irrigation and irrigation systems- storage, transport and marketing of agricultural produce and issues and related constraints; e-technology in the aid of farmers.
5	प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कृषि सहायता तथा न्यूनतम समर्थन मूल्य से संबंधित विषय जन वितरण प्रणाली- उद्देश्य, कार्य, सीमाएँ, सुधार बफर स्टॉक तथा खाद्य सुरक्षा संबंधी विषय प्रौद्योगिकी मिशन पशुपालन संबंधी अर्थशास्त्र।	5	Issues related to direct and indirect from subsidies and minimum support prices; Public Distribution System - objectives, functioning, limitations, revamping; issues of buffer stocks and food security; Technology missions; economics of animal-rearing.
6	भारत में खाद्य प्रसंस्करण एवं संबंधित उद्योग- कार्यक्षेत्र एवं महत्व, स्थान, ऊपरी और नीचे की अपेक्षाएँ, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन।	6	Food processing and related industries in India - scope and significance, location, upstream and downstream requirements, supply chain management.
7	भारत में भूमि सुधार।	7	Land reforms in India.
8	उदारीकरण का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, औद्योगिक नीति में परिवर्तन तथा औद्योगिक विकास पर इनका प्रभाव।	8	Effect of liberalization on the economy, changes in industrial policy and their effects on industrial growth.

9	बुनियादी ढाँचा— ऊर्जा, बंदरगाह, सड़क, विमानपत्तन, रेलवे आदि।	9	Infrastructure: Energy, Ports, Roads, Airports, Railways etc.
10	निवेश मॉडल।	10	Investment models.
11	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी— विकास एवं अनुप्रयोग और रोजमर्रा के जीवन पर इसका प्रभाव।	11	Science and Technology- developments and their applications and effects in everyday life.
12	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारतीयों की उपलब्धियाँ; देशज रूप से प्रौद्योगिकी का विकास और नई प्रौद्योगिकी का विकास।	12	Achievements of Indians in Science & Technology; indigenization of technology and developing new technology.
13	सूचना प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, कंप्यूटर, रोबोटिक्स, नैनो-टेक्नोलॉजी, बायो-टेक्नोलॉजी, और बौद्धिक सम्पदा अधिकारों से संबंधित विषयों के संबंध में जागरूकता।	13	Awareness in the fields of IT, Space, Computers, robotics, nano-technology, bio-technology and issues relating to intellectual property rights.
14	संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण, पर्यावरण प्रभाव का आकलन।	14	Conservation, environmental pollution and degradation, environmental impact assessment.
15	आपदा और आपदा प्रबंधन।	15	Disaster and disaster management.
16	विकास और फैलते उग्रवाद के बीच संबंध।	16	Linkages between development and spread of extremism.
17	आंतरिक सुरक्षा के लिये चुनौती उत्पन्न करने वाले शासन विरोधी तत्त्वों की भूमिका।	17	Role of external state and non-state actors in creating challenges to internal security.
18	संचार नेटवर्क के माध्यम से आंतरिक सुरक्षा को चुनौती, आंतरिक सुरक्षा चुनौतियों में मीडिया और सामाजिक नेटवर्किंग साइटों की भूमिका, साइबर सुरक्षा की बुनियादी बातें, धन-शोधन और इसे रोकना।	18	Challenges to internal security through communication networks, role of media and social networking sites in internal security challenges, basics of cyber security; money-laundering and its prevention.
19	सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा चुनौतियाँ एवं उनका प्रबंधन— संगठित अपराध और आतंकवाद के बीच संबंध।	19	Security challenges and their management in border areas- linkages of organized crime with terrorism.
20	विभिन्न सुरक्षा बल और संस्थाएँ तथा उनके अधिदेश।	20	Various Security forces and agencies and their mandate.

सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-4 : नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि		G.S. Paper 4: Ethics, Integrity and Aptitude	
इस प्रश्नपत्र में ऐसे प्रश्न शामिल होंगे जो सार्वजनिक जीवन में उम्मीदवारों की सत्यनिष्ठा, ईमानदारी से संबंधित विषयों के प्रति उनकी अभिवृत्ति तथा उनके दृष्टिकोण तथा समाज से आचार-व्यवहार में विभिन्न मुद्दों तथा सामने आने वाली समस्याओं के समाधान को लेकर उनकी मनोवृत्ति का परीक्षण करेंगे। इन आयामों का निर्धारण करने के लिये प्रश्न-पत्र में किसी मामले के अध्ययन (केस स्टडी) का माध्यम भी चुना जा सकता है। मुख्य रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों को कवर किया जाएगा।		This space will include questions to test the candidates attitude and approach to issues relating to integrity, probity in public life and his problem solving approach to various issues and conflicts faced by him in dealing with society. Questions may utilise the case study approach to determine these aspects. The following broad areas will be covered.	
क्र.सं.	विषय	S.No.	Topic
1	नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध : मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्व, इसके निर्धारक और परिणामय नीतिशास्त्र के आयामय निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र, मानवीय मूल्य— महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन तथा उनके उपदेशों से शिक्षाय मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका।	1	Ethics and Human Interface: Essence, determinants and consequences of Ethics in human actions; dimensions of ethics; ethics in private and public relationships. Human Values lessons from the lives and teachings of great leaders, reformers and administrators: role of family, society and

			educational institutions in including values.
2	अभिवृत्ति रू सारांश (कंटेन्ट), संरचना, वृत्तिय विचार तथा आचरण के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रभाव एवं संबंधय नैतिक और राजनीतिक अभिरुचिय सामाजिक प्रभाव और धारणा।	2	Attitude: Content, structure, function; its influence and relation with thought and behaviour; moral and political attitudes; social influence and persuasion.
3	सिविल सेवा के लिए अभिरुचि तथा बुनियादी मूल्य : सत्यनिष्ठा, भेदभावरहित तथा गैर-तरफदारी, निष्पक्षता, सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण भाव, कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता तथा संवेदना।	3	Aptitude and foundational values for Civil Services-integrity, impartiality and non-partisanship, objectivity, dedication to public service, empathy, tolerance and compassion towards the weaker sections.
4	भावात्मक समझ : अवधारणाएँ तथा प्रशासन और शासन व्यवस्था में उनके उपयोग और प्रयोग।	4	Emotional intelligence-concepts, and their utilities and application in administration and governance.
5	भारत तथा विश्व के नैतिक विचारकों तथा दार्शनिकों के योगदान।	5	Contributions of moral thinkers and philosophers from India and world.
6	लोक प्रशासन में लोकधसिविल सेवा मूल्य तथा नीतिशास्त्र : स्थिति तथा समस्याएँ सरकारी तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएँ तथा दुविधाएँ; नैतिक मार्गदर्शन के स्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियम तथा अंतरात्माय उत्तरदायित्व तथा नैतिक शासन, शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढीकरण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा निधि व्यवस्था (फंडिंग) में नैतिक मुद्देय कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था।	6	Public/Civil service values and Ethics in Public administration: Status and problems; ethical concerns and dilemmas in government and private institutions; laws, rules, regulations and conscience as sources of ethical guidance; accountability and ethical governance: strengthening of ethical and moral values in governance; ethical issues in international relations and funding; corporate governance.
7	शासन व्यवस्था में ईमानदारी : लोक सेवा की अवधारणाय शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार, सरकार में सूचना का आदान-प्रदान और पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, नीतिपरक आचार संहिता, आचार संहिता, नागरिक घोषणा पत्र, कार्य संस्कृति, सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता, लोक निधि का उपयोग, भ्रष्टाचार की चुनौतियाँ।	7	Probity in Governance: Concept of public service: Philosophical basis of governance and probity; Information sharing and transparency in government, Right to Information, Codes of Ethics, Codes of Conduct, Citizen's Charters, Work culture, Quality of service delivery, Utilization of public funds, challenges of corruption.
8	उपर्युक्त विषयों पर मामला संबंधी अध्ययन (केस स्टडीज)।	8	Case Studies on above issues.

अर्हकारी विषय (Qualifying Subjects)

हिंदी या संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल कोई भाषा

मुख्य परीक्षा में दो प्रश्नपत्र अर्हकारी प्रकृति के होते हैं। इनमें से एक अंग्रेजी भाषा का और दूसरा संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किसी एक भारतीय भाषा का।

भारतीय भाषा के लिये उम्मीदवार को आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं में से किसी एक का चयन करना होता है। अपवादस्वरूप, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड और सिक्किम के रहने वाले उम्मीदवारों के लिये यह प्रश्नपत्र अनिवार्य नहीं होगा।

इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 300 है, जिसमें अर्हकारी अंक 75 (25%) निर्धारित किये गए हैं। प्रश्नों का प्रारूप सामान्य रूप से इस प्रकार होगा—

बोधगम्यता

संक्षिप्त लेखन

शब्द प्रयोग व शब्द भंडार

लघु निबंध

अंग्रेजी से भारतीय भाषा तथा भारतीय भाषा से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद

अंग्रेजी भाषा

इस प्रश्नपत्र का पूर्णांक 300 है, जिसमें अर्हकारी अंक 75 (25%) निर्धारित किये गए हैं। प्रश्नों का प्रारूप सामान्य रूप से इस प्रकार होगा—

1. Comprehension (बोधगम्यता)
2. Precis writing (संक्षिप्त लेखन)
3. Usage and Vocabulary (शब्द प्रयोग व शब्द भंडार)
4. Short Essay (लघु निबंध)

नोट :

- भारतीय भाषा और अंग्रेजी के प्रश्नपत्र मैट्रिकुलेशन अथवा समकक्ष स्तर के होंगे, इनमें उम्मीदवार को सिर्फ क्वालीफाई करना होगा। इन प्रश्नपत्रों में प्राप्त अंकों को योग्यता क्रम निर्धारित करने में शामिल नहीं किया जाता है।
- सभी उम्मीदवारों के निबंध, सामान्य अध्ययन और वैकल्पिक विषय के प्रश्नपत्रों का मूल्यांकन 'भारतीय भाषा' तथा अंग्रेजी के उन अर्हक प्रश्नपत्रों के साथ ही किया जाएगा, लेकिन निबंध, सामान्य अध्ययन तथा वैकल्पिक विषय के प्रश्नपत्रों पर केवल ऐसे उम्मीदवार के मामले में विचार किया जाएगा, जिन्होंने भारतीय भाषा एवं अंग्रेजी में न्यूनतम 25–25% अंक प्राप्त किये हों।

हिंदी माध्यम से जुड़ी समस्याएँ (Problems associated with Hindi Medium)

हिंदी माध्यम से सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले उम्मीदवारों को सामान्य अध्ययन से जुड़ी उन समस्याओं की समझ होनी चाहिये जो विशेष रूप से तैयारी एवं परीक्षा के दौरान उनके सामने आती हैं।

सबसे बड़ी समस्या यह है कि मुख्य परीक्षा में सामान्य अध्ययन में हिंदी माध्यम के उम्मीदवार अंग्रेजी माध्यम की तुलना में कुछ नुकसान की स्थिति में रहते हैं। उदाहरणस्वरूप, अगर हम किसी भी वर्ष के परीक्षा परिणाम में अंग्रेजी और हिंदी माध्यम के उम्मीदवारों के सामान्य अध्ययन के अंकों की तुलना करें तो पाएंगे कि हिंदी माध्यम के उम्मीदवार औसतन 30–35 अंक पीछे रह जाते हैं। यही स्थिति दोनों माध्यमों के टॉपर्स के अंकों के बीच भी देखी जा सकती है। हालाँकि, ऐसा भी नहीं है कि यूपीएससी जानबूझकर हिंदी माध्यम के खिलाफ कोई साजिश करता है। दरअसल, यह नुकसान परीक्षा प्रणाली की आंतरिक प्रकृति के चलते होता है। इसके कुछ कारण इस प्रकार हैं—

- पहला, यह कि अंग्रेजी में जिस स्तर की अध्ययन-सामग्री उपलब्ध है, हिंदी में उस तरह की अध्ययन-सामग्री नहीं मिल पाती है। यह समस्या उन खंडों में और ज्यादा गंभीर हो जाती है जिनका संबंध करेंट अफेयर्स से है। इन खंडों में मुख्य रूप से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम और अर्थव्यवस्था शामिल हैं। गौर करने वाली बात है कि इन खंडों के लिये न सिर्फ पुस्तकों, पत्रिकाओं और 'जर्नल्स' में, बल्कि इंटरनेट पर भी हिंदी में स्तरीय अध्ययन-सामग्री नहीं मिल पाती है।
- दूसरा कारण यह है कि सामान्य अध्ययन की कॉपी की जाँच करने वाले अधिकांश परीक्षक अंग्रेजी में अधिक (और हिंदी में कम) सहज होने के कारण हिंदी माध्यम के उम्मीदवारों की अभिव्यक्ति से पूरी तरह से समन्वय नहीं बैठा पाते हैं। यह समस्या उन खंडों में और ज्यादा देखने को मिलती है, जिनमें पारिभाषिक या तकनीकी शब्दावली का अधिक प्रयोग होता है क्योंकि इन शब्दों के हिंदी अनुवाद परीक्षकों के लिये दुर्बोध होते हैं। ऐसे खंडों में भूगोल, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को मुख्य रूप से शामिल किया जा सकता है।
- ध्यातव्य है कि सिविल सेवा परीक्षा का प्रश्नपत्र मूल रूप से अंग्रेजी में तैयार किया जाता है और हिंदी में उसका अनुवाद किया जाता है। इसलिये कभी-कभी प्रश्नपत्र में अनुवाद की गलती की वजह से भी हिंदी माध्यम के उम्मीदवारों को नुकसान उठाना पड़ता है, क्योंकि अगर अनुवादक किसी तकनीकी शब्द का अनुवाद पुस्तकों में प्रचलित अनुवाद से अलग रूप में कर दे या किसी मुहावरेदार अभिव्यक्ति को सटीक रूप में न समझ पाने के कारण अर्थ का अनर्थ कर दे तो उसकी गलती की सजा हिंदी माध्यम के उम्मीदवारों को भुगतनी पड़ती है।

उपर्युक्त सभी कारणों के अतिरिक्त, हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि साक्षात्कार (Interview) में भी हिंदी माध्यम के उम्मीदवार कई बार नुकसान की स्थिति में रहते हैं।

निबंध : एक परिचय (Essay: An Introduction)

निबंध प्रश्नपत्र दो खंडों में बँटा होता है। प्रत्येक खंड में 4–4 विषय दिये होते हैं, परीक्षार्थियों को इन दोनों खंडों में से एक-एक विषय पर निबंध लिखना होता है। प्रत्येक निबंध के लिये 1000 से लेकर 1200 शब्दों की शब्द-सीमा और 125–125 अंक निर्धारित किये गए हैं। इस प्रकार, निबंध प्रश्नपत्र कुल 250 अंकों का होता है। सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले उम्मीदवारों के बीच निबंध प्रश्नपत्र को लेकर मुख्य दुविधा यह रहती है कि निबंध आखिर क्या है और इसमें हमसे क्या जानने की कोशिश की जाती है? इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि परीक्षार्थी सबसे पहले यह समझें कि निबंध क्या होता है और निबंध प्रश्नपत्र में अधिक-से-अधिक अंक किस प्रकार प्राप्त किये जाएँ?

अगर साधारण भाषा में कहें तो निबंध हमारे व्यक्तित्व का दर्पण होता है। इस प्रश्नपत्र के पीछे यूपीएससी का उद्देश्य हमारे ज्ञान से अधिक व्यक्तित्व का परीक्षण करना है। निबंध लेखन के दौरान हमारा शब्द चयन हमारी संवेदनशीलता, एक सिविल सेवक के रूप में हमारी सत्यनिष्ठा और उद्देश्य के प्रति हमारी दृढ़ता एवं नैतिकता को व्यक्त करता है।

प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में से किसी एक खंड में अमूर्त और दार्शनिक प्रकृति के विषय पर निबंध पूछे जाते हैं, जबकि दूसरे खंड में सूचना आधारित विषयों पर निबंध पूछे जाते हैं। अमूर्त व दार्शनिक प्रकृति के विषयों में जहाँ विषय का गहन विश्लेषण, विषय के प्रति हमारी समझ और उसे प्रस्तुत करने का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण होता है, वहीं सूचना आधारित विषयों में हमें तथ्य और विश्लेषण का मिला-जुला रूप प्रस्तुत करना होता है।

निबंध प्रश्नपत्र में एक बड़ी चुनौती निर्धारित शब्द-सीमा (1000 से 1200 शब्दों) में पूछे गए विषय के सभी पक्षों को प्रस्तुत करने की है। इसके लिये आवश्यक हो जाता है कि हम दिये गए विषय की मूल-आत्मा को पहचानें और आवश्यक विषय-वस्तु को निर्धारित समय व शब्द-सीमा में प्रस्तुत करें। हालाँकि, अमूर्त प्रकृति के विषयों में हमारे पास यह स्वतंत्रता होती है कि हम विषय को अपने अनुसार परिभाषित कर सकते हैं, जैसे 2019 की मुख्य परीक्षा में यूपीएससी द्वारा पूछा गया कि 'विवेक सत्य को खोज निकालता है'। इस विषय पर हम विवेक और सत्य की परिभाषाएँ और उनके विभिन्न पहलू अपनी समझ के अनुसार निर्धारित कर सकते हैं। लेकिन जब निबंध का विषय इससे भिन्न प्रकृति का हो, जैसे—'पक्षपातपूर्ण मीडिया भारत के लोकतंत्र के समक्ष एक वास्तविक खतरा है'; तो ऐसे विषय तथ्य और विश्लेषण दोनों की अपेक्षा रखते हैं। हालाँकि, यहाँ एक बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिये कि निबंध तथ्यों का कोरा संकलन मात्र न होकर, सूचना, भाषा, अभिव्यक्ति, विश्लेषण तथा ज्ञान का सामंजस्य है।

आखिर, निबंध की तैयारी कैसे की जाए? मुख्य परीक्षा की तैयारी करने वाले उम्मीदवारों के लिये यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। एक अच्छा निबंध एक-दो पुस्तकें पढ़ लेने या कोई फॉर्मूला जान लेने से नहीं बल्कि विषय की गंभीर समझ और निरंतर अभ्यास द्वारा ही लिखा जा सकता है। साथ ही, हमें यह भी समझ लेना चाहिये कि मुख्य परीक्षा में पास होने के साथ-साथ एक अच्छा निबंध आपके अंतिम चयन में भी निर्णायक भूमिका निभा सकता है, क्योंकि पूरी परीक्षा में यही एक विषय है जहाँ आप अपनी रचनात्मकता और मौलिकता के दम पर बाकी उम्मीदवारों से आगे निकल सकते हैं।

साक्षात्कार

साक्षात्कार सिविल सेवा परीक्षा का तीसरा एवं अंतिम चरण है। इस चरण में मुख्य परीक्षा में सफल उम्मीदवारों के व्यक्तित्व का परीक्षण किया जाता है। इसमें उम्मीदवारों की सत्यनिष्ठा, मानसिक सतर्कता, तार्किक विश्लेषण क्षमता, सामाजिक सामंजस्य कौशल और नेतृत्व क्षमता के गुणों को जाँचा परखा जाता है। वस्तुतः सिविल सेवा परीक्षा एक उम्मीदवार की निर्णय क्षमता, अभिव्यक्ति कौशल और व्यक्तित्व की समग्र परीक्षा है। प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा की प्रकृति से भिन्न, साक्षात्कार में बोर्ड के सदस्यों द्वारा उम्मीदवार से मौखिक प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनका उत्तर उम्मीदवार को मौखिक रूप से ही देना होता है। साथ ही, प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा की तरह साक्षात्कार का कोई निश्चित पाठ्यक्रम भी नहीं होता है, अतः इसमें पूछे जाने वाले प्रश्नों का दायरा व्यापक होता है। सिविल सेवा परीक्षा में उम्मीदवारों के चयन की अंतिम सूची मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार के अंकों के योग के आधार पर तैयार की जाती है। हालाँकि, मुख्य परीक्षा के अंकों (1750 अंक) की तुलना में साक्षात्कार के अंकों (275) का भारांश कम अवश्य है, लेकिन अंतिम चयन में साक्षात्कार के अंकों की विशेष भूमिका होती है।

साक्षात्कार में पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रकृति और उनके दायरे का अवलोकन करें तो एक बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है, सिविल सेवा परीक्षा का यह चरण ऐसा है जिसकी तैयारी प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा की तरह एक-दो वर्ष की निर्धारित समयावधि में नहीं की जा सकती है। चूँकि साक्षात्कार किसी भी उम्मीदवार के व्यक्तित्व का परीक्षण है, अतः व्यावहारिक रूप से इसकी तैयारी जीवन के शुरुआती दौर में ही शुरू हो जाती है, क्योंकि व्यक्तित्व का निर्माण एक-दो वर्षों में नहीं होता है। घर-परिवार, आस-पड़ोस, स्कूल और कॉलेज में उम्मीदवार को मिले अनुभव और अवसर व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, इसका यह अर्थ नहीं है कि एक निश्चित समयावधि में व्यक्तित्व को बेहतर तरीके से निखारा नहीं जा सकता है। सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के दौरान उम्मीदवार को विभिन्न प्रकार की व्यावहारिक चुनौतियों, भावनात्मक द्वंद्वों और निर्णय संबंधी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इसलिये, अगर इस समय-काल में व्यक्तित्व विकास पर ध्यान दिया जाए तो व्यक्तित्व को और बेहतर बनाया जा सकता है।

यह बात तय है कि उम्मीदवार के व्यक्तित्व का विकास जिस स्तर पर हुआ है, अगर वह योजनाबद्ध और व्यवस्थित तैयारी करेगा तो अपने स्तर पर सामान्यतः मिलने वाले अंकों में कुछ अंकों का इजाफा तो कर ही सकता है। उदाहरण के लिये, यदि उम्मीदवार का व्यक्तित्व अत्यंत विकसित है और बिना तैयारी के वह 275 में से 175-180 अंक लाने की काबिलियत रखता है तो यह निश्चित है कि रणनीति बनाकर तैयारी करने पर वह 190-210 अंकों की परिधि को छू सकता है। चूँकि सिविल सेवा परीक्षा में अंतिम चयन और पद-निर्धारण में एक-एक अंक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, अतः इस आधार पर साक्षात्कार की तैयारी को नजरअंदाज करना रणनीतिक भूल होगी।